The Scheduled Castes and the Scheduled Tribes (Prevention of Atrocities) Act, 1989
No. 33 of 1989
THE SCHEDULED CASTES AND THE SCHEDULED TRIBES
(PREVENTION OF ATROCITIES) ACT, 1989
No. 33 of 1989

[11th September, 1989.]

An Act to prevent the commission of offences of atrocities against
the members of the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes,
to provide for Special Courts for the trial of such offences and
for the relief and rehabilitation of the victims of such offences
and for matters connected therewith or incidental thereto.

Be it enacted by Parliament in the Fortieth Year of the Republic of
India as follows:—

CHAPTER I
PRELIMINARY

1. (1) This Act may be called the Scheduled Castes and the Scheduled

   (2) It extends to the whole of India except the State of Jammu and
   Kashmir.

   (3) It shall come into force on such date as the Central Government
   may, by notification in the Official Gazette, appoint.

2. (1) In this Act unless the context otherwise requires,—

   (a) "atrocities" means an offence punishable under section 3;

   (b) "Code" means the Code of Criminal Procedure, 1973;

   (c) "Scheduled Castes and Scheduled Tribes" shall have the
   meanings assigned to them respectively under clause (24) and clause
   (25) of article 366 of the Constitution:

   (d) "Special Court" means a Court of Session specified as a
   Special Court in section 14;

   (e) "Special Public Prosecutor" means a Public Prosecutor speci-
   fied as a Special Public Prosecutor or an advocate referred to in sec-
   tion 15;

   (f) words and expressions used but not defined in this Act and
   defined in the Code or the Indian Penal Code shall have the meanings
   assigned to them respectively in the Code, or as the case may be, in
   the Indian Penal Code.

(2) Any reference in this Act to any enactment or any provision
thereof shall, in relation to an area in which such enactment or such pro-
vision is not in force, be construed as a reference to the corresponding law,
if any, in force in that area.
अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989

(1989 का अधिनियम संख्या 33) [11 सितंबर, 1989]

अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के खिलाफ अत्याचार का व्यवसाय करने या निवारण करने के लिए,
ऐसे अधिकारियों के कार्यालय के लिए विशेष न्यायालयों
का तथा ऐसे अपराधों से पीड़ित अनुसूचित जातियों को
राहत हेतु का और उनके पुरकार का राह
उससे संबंधित या उसके वाणिज्यिक
बिंदुओं का उपयोग
करने के लिए
वाणिज्य

भारत गणराज्य के चारों ओर से संसदद्वारा निर्मित सूची नहीं यह अधिनियम ही —
भाग 1

प्रारूपक

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारूप—(1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति
(अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 है।

(2) इसका विस्तार अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति
(अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 है।

(3) यह उस तारीख को प्रदत्त होगा जो केंद्रीय सरकार राजनीति में जनसंघर्षा द्वारा नियत करे।

2. परिभाषाएँ—(1) इस अधिनियम में, जब तक नि:शंका वस्तु का अधिकार नहीं हो,—

(ए) 'अत्याचार' से धारा 3 के अधीन अदालत निर्धारित है।

(ब) 'संहिता' से अंक प्रथम संहिता, 1973 (1974 का 2) अधिनियम है।

(ग) 'अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों' के बाहर अर्थ है जो संविधान के अनुसार 366 के अंक (24) और
बंड (25) में हैं;

(घ) 'विशेष न्यायालय' से धारा 14 में विशेष न्यायालय के रूप में निर्दिष्ट कोई वैश्विक न्यायालय अधिनियम है;

(ङ) 'विशेष लोक अभियोजक' से विशेष लोक अभियोजक के रूप में निर्दिष्ट विभिन्न अभियोजक और अधिकार
15 में
निर्दिष्ट विभिन्न अभियोजक है;

(च) उन शब्दों और वर्ध के जो इस अधिनियम में प्रबुद्ध किए हैं किन्तु परिवर्तित नहीं हैं और संहिता या भारतीय बंड
संहिता में परिवर्तित हैं, वही अर्थ है जो वाणिज्यित, संहिता में या भारतीय बंड संहिता (1860 का 45) में है।

(2) इस अधिनियम में किसी अभियोजित वा उसके किसी उपवेद के प्रति किसी निवेदक का अर्थ, किसी ऐसे क्षेत्र के संबंध में
जिसमें ऐसी अभियोजित या ऐसा उपवेद प्रबुद्ध नहीं है, वह लगातार जारी कि बंद उस क्षेत्र में प्रबुद्ध तत्त्वानी विधि, यदि कोई
हो, के प्रति निवेद है।
CHAPTER II
OFFENCES OF ATROCITIES

3. (1) Whoever, not being a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe,—

(i) forces a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe to drink or eat any inedible or obnoxious substance;

(ii) acts with intent to cause injury, insult or annoyance to any member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe by dumping excreta, waste matter, carcasses or any other obnoxious substance in his premises or neighbourhood;

(iii) forcibly removes clothes from the person of a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe or parades him naked or with painted face or body or commits any similar act which is derogatory to human dignity;

(iv) wrongfully occupies or cultivates any land owned by, or allotted to, or notified by any competent authority to be allotted to, a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe or gets the land allotted to him transferred;

(v) wrongfully dispossesses a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe from his land or premises or interferes with the enjoyment of his rights over any land, premises or water;

(vi) compels or entices a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribes to do ‘begar’ or other similar forms of forced or bonded labour other than any compulsory service for public purposes imposed by Government;

(vii) forces or intimidates a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe not to vote or to vote to a particular candidate or to vote in a manner other than that provided by law;

(viii) institutes false, malicious or vexatious suit or criminal or other legal proceedings against a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe;

(ix) gives any false or frivolous information to any public servant and thereby causes such public servant to use his lawful power to the injury or annoyance of a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe;

(x) intentionally insults or intimidates with intent to humiliate a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe in any place within public view;

(xi) assaults or uses force to any woman belonging to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe with intent to dishonour or outrage her modesty;
3. गत्याचार के कारणों के लिए डंड— (1) कोई भी व्यक्ति, जो अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति का सदस्य नहीं है,—

(i) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के सदस्य की अवधारणा या ध्रुवजनक पदवी धारी या वान देखने के लिए मान्यता करेगा;

(ii) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य के परिसर या पड़ोसी में मल-मृत्यु, भूख, प्रद-श्रवण या कोई अन्य ध्रुवजनक पदवी इकान्त करके उसे धारा पहुँचाने, अपमानित करने या शुद्ध करने के आरोप से कार्य करेगा;

(iii) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के सदस्य के सर्जर से बाबूरूपक करार, उचाईया या उसे नंगा या उसके चेहरे या शरीर को दोतकर पुरापाठ या इत्यादि प्रकार का कोई अन्य ऐसा कार्य करेगा जो मानव के सम्बन्ध के विरूद्ध है;

(iv) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य के स्वास्थ्यवेत्ता या दूसरे आयुर्विज्ञान का नियम, सवारी, शरीर, स्थान या प्रभावी द्वारा उसे आह्वानित किया जाने के लिए अवधारणा की यूनिट को सदस्य अविभाज्य में लेगा या उस पर सीटी करेगा या उस आह्वानित यूनिट को अंतर्गत कर लेगा;

(v) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य को उसकी धारा या परिसर से व्यवहार बेकाबू करेगा या किसी धारा, परिसर या जग द्वारा उसके अधिकारों के उपरोक्त में हस्ताक्षर करेगा;

(vi) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य को “बेचारा” कहने के लिए या संकर्तार के लिए उचाईया या अन्य विद्युत अवधारणे के लिए अवधारणा किसी तरह से विभाजित किया जाने से विभाजित किया जाने के लिए या अवधारणा के लिए विला द्वारा उसे चिन्ता या चिन्ता सहित करेगा;

(vii) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य को मानदंड या न न न करने के लिए या अन्य विभाजित अवधारणा के लिए विभाजित करने के लिए या अवधारणा या अपमानित करने के लिए मानदंड या अभिनव करेगा;

(viii) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य के विनियम की यूनिट देखतार या तंग करने वाला वाद या वाणिज्य या अन्य विभिन्न कार्यों की सहित करेगा;

(ix) किसी लोकोपाल को कोई विविध या दुर्ग्रस्त जानकारी देना और उसके द्वारा अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य को धारा पहुँचाने या धारा करने के लिए ऐसे लोक से प्रवेश के द्वारा इन्कारी विभाजित या अवधारणा करेगा;

(x) जनजाति को दृष्टिगणना की तथा स्वास्थ्य में अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य की अपमानित करने के आरोप द्वारा साध्य उसके अपमानित या अभिनव करेगा;

(xi) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति की किसी महिला का आगाद करने या उसकी लाभ भंग करने के आरोप के लिए सहमति या न न करेगा.
(xii) being in a position to dominate the will of a woman belonging to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and uses that position to exploit her sexually to which she would not have otherwise agreed;

(xiii) corrupts or fouls the water of any spring, reservoir or any other source ordinarily used by members of the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes so as to render it less fit for the purpose for which it is ordinarily used;

(xiv) denies a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe any customary right of passage to a place of public resort or obstructs such member so as to prevent him from using or having access to a place of public resort to which other members of public or any section thereof have a right to use or access to;

(xv) forces or causes a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe to leave his house, village, or other place of residence,

shall be punishable with imprisonment for a term which shall not be less than six months but which may extend to five years and with fine.

(2) Whoever, not being a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe,—

(i) gives or fabricates false evidence intending thereby to cause, or knowing it to be likely that he will thereby cause, any member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe to be convicted of an offence which is capital by the law for the time being in force shall be punished with imprisonment for life and with fine; and if an innocent member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe be convicted and executed in consequence of such false or fabricated evidence, the person who gives or fabricates such false evidence, shall be punished with death;

(ii) gives or fabricates false evidence intending thereby to cause, or knowing it to be likely that he will thereby cause, any member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe to be convicted of an offence which is not capital but punishable with imprisonment for a term of seven years or upwards, shall be punishable with imprisonment for a term which shall not be less than six months but which may extend to seven years or upwards and with fine;

(iii) commits mischief by fire or any explosive substance intending to cause or knowing it to be likely that he will thereby cause damage to any property belonging to a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe, shall be punishable with imprisonment for a term which shall not be less than six months but which may extend to seven years and with fine;
(xii) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति की किसी महिला की इच्छा को अभिलस्तित करने की स्थिति में होने पर उस निवित का प्रयोग उदास हीनांक श्रेणी करने के लिए, बिज्जक के लिए वह अन्यथा बहाना नहीं होगी, करेगा;

(xiii) किसी ब्राह्म, अहिल्या या किसी अन्य उच्चमंडल के जल को, जो आग सीर पर अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के सदस्यों द्वारा उपयोग में लाया जाता है, दूरित पर गोल्फ करेगा जिससे कि वह उस प्रयोजन के लिए कभी उपयुक्त हो जाए जिसके लिए उसका आमतौर पर प्रयोग किया जाता है;

(xiv) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य को सार्वजनिक अभिनव के स्तर के मर्म के किसी कृतिक अवसर में भित्ति करेगा या ऐसे किसी सदस्य को जायामहिलाएं जिसके कि वह ऐसे सार्वजनिक अभिनव के स्तर का उपयोग करते हैं या ऐसे पहुँचे से निर्विश्वास हो जाए जहां जनता के अन्य सदस्यों या उनके किसी मान को उपयोग करते खाली पहुँच रहे का अवकाश है;

(xv) अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य को अग्रण साधन, गाय या अन्य निवास-स्थान छोड़ने के लिए ग्रामीण करेगा या कराएगा यह आरक्षण विषय अधिक हाल मास दे कम नहीं होनी जितूं जो पांव वर्ष तक की हो सकेगी, और जुर्माने से दंडनीय होगा।

(2) कोई व्यक्ति, जो अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति का सदस्य नहीं है,

(i) मिल्या साधन देगा या गोल्फ, जिससे उसका आरक्षण अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य को किसी ऐसे अपराध के लिए, जो तत्काल प्रदूष निकल गया भुगुन दंड से दंडनीय है, लोखिंद्र करता है या वह यह लगता है कि इसके प्रकाश लोखिंद्र हो गया संभावित है, यह आजीवन वायुदायक व जुर्माने से दंडनीय होगा, और यदि अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी निर्तिम सदस्य को ऐसा मिल्या या गोल्फ हुए अपराध के भलास्क लोखिंद्र किया जाता है, और पांवी ही जाति है तो वह व्यक्ति, जो ऐसा मिल्या साधन देता है या गोल्फ हो, मृदुल दंड से दंडनीय होगा।

(ii) मिल्या साधन देगा या गोल्फ, जिससे उसका आरक्षण अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य को ऐसे अपराध के लिए, जो गृहुकुल दंड से दंडनीय नहीं है किंतु सात वर्ष या उससे अधिक की अवधि के कारणामये से दंडनीय है, लोखिंद्र करता है या वह यह जानता है कि उससे उसका लोखिंद्र होना संभावित है, यह आजीवन व जुर्माने से दंडनीय होना संभव है, यह आजीवन दे जिसकी अवधि चार मास से तीन की नहीं होगी किंतु जो सात वर्ष या उससे अधिक को हो सकेगी और जुर्माने से दंडनीय होगा;

(iii) किसी निर्तिम विभिन्न प्रकार द्वारा दिन्त पर जो करेगा जिससे उसका आरक्षण अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के किसी सदस्य की किसी शर्त में की गुणवत्ता महत्वाकांक्षी है या वह यह जानता है कि उससे ऐसी होना संभावित है, यह आजीवन दे, जिसकी अवधि चार मास से कम नहीं होगी किंतु जो सात वर्ष तक की हो सकेगी और जुर्माने से दंडनीय होगा;
(iv) commits mischief by fire or any explosive substance intending to cause or knowing it to be likely that he will thereby cause destruction of any building which is ordinarily used as a place of worship or as a place for human dwelling or as a place for custody of the property by a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe, shall be punishable with imprisonment for life and with fine;

(v) commits any offence under the Indian Penal Code punishable with imprisonment for a term of ten years or more against a person or property on the ground that such person is a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe or such property belongs to such member, shall be punishable with imprisonment for life and with fine;

(vi) knowingly or having reason to believe that an offence has been committed under this Chapter, causes any evidence of the commission of that offence to disappear with the intention of screening the offender from legal punishment, or with that intention gives any information respecting the offence which he knows or believes to be false, shall be punishable with the punishment provided for that offence; or

(vii) being a public servant, commits any offence under this section, shall be punishable with imprisonment for a term which shall not be less than one year but which may extend to the punishment provided for that offence.

4. Whoever, being a public servant but not being a member of a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe, wilfully neglects his duties required to be performed by him under this Act, shall be punishable with imprisonment for a term which shall not be less than six months but which may extend to one year.

5. Whoever, having already been convicted of an offence under this Chapter is convicted for the second offence or any offence subsequent to the second offence, shall be punishable with imprisonment for a term which shall not be less than one year but which may extend to the punishment provided for that offence.

6. Subject to the other provisions of this Act, the provisions of section 34, Chapter III, Chapter IV, Chapter V, Chapter VA, section 149 and Chapter XXIII of the Indian Penal Code, shall, so far as may be, apply for the purposes of this Act as they apply for the purposes of the Indian Penal Code.
(v) गार्डियन दंड संहिता (1960 का 45) के अधीन 10 वर्ष या उसके बाद की अवधि के कार्यवाह से दंडनीय कोई अपराध के विषय में ध्येय इस बात पर कहा कि ऐसा ध्येय अनुमूलित जाति या अनुमूलित जनजाति का वर्ग है या ऐसी संपति ऐसे वर्ग की है, वह गार्डियन कार्यवाह से और जुगने से दंडनीय होगा।

(vi) यह जानते हुए या विश्वास करने का कारण रखते हुए कि इस माध्यम के अधीन कोई अपराध किया गया है, वह अपराध किये जाने के बाद विश्वास के विश्व भर बचाने के लिए गार्डियन का उपाय से निर्भर करना चाहता है। यह जानता है या विश्वास करता है कि वह नियम है, वह उस अपराध के लिए उपबंधित दंड से दंडनीय होगा, या

(vii) कोपशेष होते हुए इस ट्रेक के अधीन कोई अपराध किया, वह कार्यवाह से, जिसकी अवधि एक वर्ष से कम नहीं होगी जिसके लिए उपबंधित दंड तक तक हो सकती, दंडनीय होगी।

4. कहाँ उपबंधाओं के लिए दंड—कहाँ भी लोक सेवक, जो अनुमूलित जाति या अनुमूलित जनजाति का वर्ग है इस अधिनियम के अधीन उनके द्वारा पालन किया जाने के लिए अपराध किये कर्तव्य को जानने के लिए उपबंधाओं का दंडनीय करेगा, तब वह कार्यवाह ने, जिसकी अवधि चार मास से कम नहीं होगी किसी जो एक वर्ष तक की हो सकती, दंडनीय होगा।

5. प्रदाताओं पर दबाव के लिए लागू दंड—कोई ध्येयित जो, इस माध्यम के अधीन किसी अपराध के लिए फायदे ही दोषित हो, दूसरे अपराध या उसके प्रदाताओं के लिए दोषित नहीं किया जाता है, तब कार्यवाह से जिसकी अवधि एक वर्ष से कम नहीं होगी किसी जो उस अपराध के लिए उपबंधित दंड तक हो सकती, दंडनीय होगा।

6. भारतीय दंड संहिता के कर्तियाँ उपबंधों का लागू होना—इस अधिनियम के अन्तर्गत उपबंधों के अधीन रहने या भारतीय दंड संहिता (1860 का 45) की धारा 34, धारा 3, धारा 4, धारा 5, धारा 5के, धारा 149 और धारा 23 के उपराध जाने तक हो सकते, इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, उसी प्रकार लागू होंगे जिस प्रकार वे भारतीय दंड संहिता के प्रयोजनों के लिए लागू होते हैं।
7. (1) Where a person has been convicted of any offence punishable under this Chapter, the Special Court may, in addition to awarding any punishment, by order in writing, declare that any property, movable or immovable or both, belonging to the person, which has been used for the commission of that offence, shall stand forfeited to Government.

(2) Where any person is accused of any offence under this Chapter, it shall be open to the Special Court trying him to pass an order that all or any of the properties, movable or immovable or both, belonging to him, shall, during the period of such trial, be attached, and where such trial ends in conviction, the property so attached shall be liable to forfeiture to the extent it is required for the purpose of realisation of any fine imposed under this Chapter.

8. In a prosecution for an offence under this Chapter, if it is proved that—

(a) the accused rendered any financial assistance to a person accused of, or reasonably suspected of committing, an offence under this Chapter, the Special Court shall presume, unless the contrary is proved, that such person had abetted the offence;

(b) a group of persons committed an offence under this Chapter and if it is proved that the offence committed was a sequel to any existing dispute regarding land or any other matter, it shall be presumed that the offence was committed in furtherance of the common intention or in prosecution of the common object.

9. (1) Notwithstanding anything contained in the Code or in any other provision of this Act, the State Government may, if it considers it necessary or expedient so to do—

(a) for the prevention of and for coping with any offence under this Act, or

(b) for any case or class or group of cases under this Act,
in any district or part thereof, confer, by notification in the Official Gazette, on any officer of the State Government, the powers exercisable by a police officer under the Code in such district or part thereof or, as the case may be, for such case or class or group of cases, and in particular, the powers of arrest, investigation and prosecution of persons before any Special Court.

(2) All officers of police and all other officers of Government shall assist the officer referred to in sub-section (1) in the execution of the provisions of this Act or any rule, scheme or order made thereunder.

(3) The provisions of the Code shall, so far as may be, apply to the exercise of the powers by an officer under sub-section (1)
7. कृतिय व्यक्तियों की संपत्ति का समप्रयास—(1) जहां कोई व्यक्ति इस अध्याय के अधीन वंडनीय किसी अपराध के लिए दोषपिष्ट किया गया है वहाँ विशेष न्यायालय, कोई दंड देने के अधिकार, लिखित रूप में आदेश द्वारा, यह भेदित कर सकेगा कि उस व्यक्ति की कोई समपत्ति, स्वार्थ या जमान या दोनों, जिनका उस अपराध को करते हुए में प्रयोग किया गया है, सरकार को समप्रयास हो जाएगी।

(2) जहां कोई व्यक्ति इस अध्याय के अधीन किसी अपराध का अभियुक्त है, वहाँ उसका विचारण करते वक्त विशेष न्यायालय ऐसा आदेश करते हुए द्वारा स्वार्थ या जमान या दोनों, ऐसे विचारण की अवधि के दौरान, कुर्क की आदेशों और जहां ऐसे विचारण का परिणाम दोषपिष्ट है वहां इस प्रकार कुर्क की गई समपत्ति उस दीर्घ तक समस्थित होनेवाले वायरल्सीण होगी जहां तक वह इस अध्याय के अधीन अभियुक्त किसी युग्मने की वसूली के प्रयोग के लिए अभरित है।

8. अपराधों के बारे में उपदास—इस अध्याय के अधीन किसी अपराध के लिए अभियोजन में, यदि यह साबित हो जाता है कि—

(क) अभियुक्त ने इस अध्याय के अधीन अपराध करने के अभियुक्त क्षेत्र की या यूनिफ़ॉर्म रूप से संबंधित व्यक्ति की कोई विशेष गतिविद्या की हो तो विशेष न्यायालय, जब तक कि तत्कालिन साबित न किया जाए, यह उपदास करता कि ऐसे व्यक्ति ने उस अपराध का कुर्क किया था;

(ख) व्यक्तियों के किसी समूह ने इस अध्याय के अधीन अपराध किया है और वह साबित हो जाता है कि नियम अपराध या अपराध के बारे में किसी विद्यमान विचार का पता है तो यह उपदास की आदेश कि वह अपराध सामान्य आराम या सामान्य जड़-जड़ी को आप्रवेश करने के लिए किया गया था।

9. शक्तियाँ का प्रदाय किया जाना—(1) संहिता में या इस अधिनियम के किसी अन्य उपनाम में किसी बात के होते हुए भी, यदि रज्जु सरकार ऐसा करता आश्वासन या समत्रीक नम्बरी है तो वह—

(क) इस अधिनियम के अधीन किसी अपराध के निवारण के लिए और उसके नियमों के लिए, या

(ख) इस अधिनियम के अधीन किसी मामले या मामलों के बारे या बमूल के लिए, किसी जिले या उसके किसी भाग में,

रज्जु सरकार किसी अधिकारी को रज्जु में अधिकृत द्वारा, ऐसे जिले या उसके भाग में संहिता के किसी नियमों द्वारा प्रयोजन स्वतंत्र या यथास्थिति, ऐसे मामले या मामलों के बारे या बमूल के लिए, और विशेषतः ऐसी किसी विद्यमान न्यायालय के समस्त शक्तियों की प्रतिलिपि, अवधेश और अधियोजन की शक्तियों प्राप्त कर सकती।

(2) जबकि के सभी शक्तियों और द्वारक के किसी अन्य शक्तियों द्वारा इस अधिनियम के या उसके अधीन बनाए गए किसी नियम, लक्षनी या आदेश के उपरकारों के नियमानुसार उपदास (1) में प्रतिलिपि अधिकारी की सहायता करें।

(3) संहिता के उपनाम, जहां तक हो सके, उपदास (1) के अधीन किसी अधिकारी द्वारा शक्तियों के प्रयोग के संबंध में लागू होने।
CHAPTER III

EXTERNMENT

10. (1) Where the Special Court is satisfied, upon a complaint or a
police report that a person is likely to commit an offence under Chapter
II of this Act in any area included in ‘Scheduled Areas’ or ‘tribal areas’,
as referred to in article 244 of the Constitution, it may, by order in writ-
ing, direct such person to remove himself beyond the limits of such area,
by such route and within such time as may be specified in the order, and
not to return to that area from which he was directed to remove himself
for such period, not exceeding two years, as may be specified in the order.

(2) The Special Court shall, along with the order under sub-section
(1), communicate to the person directed under that sub-section the
grounds on which such order has been made.

(3) The Special Court may revoke or modify the order made under sub-
section (1), for the reasons to be recorded in writing, on the representation
made by the person against whom such order has been made or by any
other person on his behalf within thirty days from the date of the order.

11. (1) If a person to whom a direction has been issued under section
10 to remove himself from any area—

(a) fails to remove himself as directed; or

(b) having so removed himself enters such area within the
period specified in the order,

otherwise than with the permission in writing of the Special Court under
sub-section (2), the Special Court may cause him to be arrested and
removed in police custody to such place outside such area as the Special
Court may specify.

(2) The Special Court may, by order in writing, permit any person
in respect of whom an order under section 10 has been made, to return
to the area from which he was directed to remove himself for such tem-
porary period and subject to such conditions as may be specified in such
order and may require him to execute a bond with or without surety for
the due observation of the conditions imposed.

(3) The Special Court may at any time revoke any such permission.

(4) Any person who, with such permission, returns to the area from
which he was directed to remove himself shall observe the conditions im-
posed, and at the expiry of the temporary period for which he was per-
mitted to return, or on the revocation of such permission before the expiry
of such temporary period, shall remove himself outside such area and
shall not return thereto within the unexpired portion specified under
section 10 without a fresh permission.
निष्कासन

10. ऐसे मान्यता का हद भरने में अतिक्रमण विधेयक हर कार्य किसी को किए गए हैं, यह संबंधित है कि कोई क्रिया संबंधित अनुमान 244 में परिभाषित ‘अनुमानित क्षेत्र’ या ‘जनवभाजी क्षेत्र’ में सम्मिलित किसी क्षेत्र में इस अवधिकार के अधीन कोई अवधिकार कानून व नियम द्वारा लिखित इतिहास एवं ऐसे कार्य की सीमाओं में ही यह प्रदेश के सारे भाग के लिए इस धारा में विनिर्दिष्ट की जाए, उस क्षेत्र में विस्तार से जाने का किसी निवेदन नहीं किया गया था, वापस न लीजिये।

(2) विशेष न्यायालय, उपधारा (1) के अधीन आदेश के लाभ, उस उपधारा के अधीन विनिर्दिष्ट व्यक्ति को वे आदेश संबंधित करे जिन पर वह आदेश किया गया है।

(3) विशेष न्यायालय, उस अवधिकार द्वारा जिसके विनिर्देश ऐसा आदेश दिया गया है, या उसने और दूसरे कोई व्यक्ति के अधीन व्यक्ति द्वारा आदेश की तारीख से तीस दिन के भीतर किया गया आदेशदार पर ऐसे कार्यों से जो विस्मित किया जाए, उससे उच्च न्यायालय (1) के अधीन किए गए आदेश की प्रतिसंरक्षण या उपायार्थित कर सकेंगा।

11. किसी मान्यता द्वारा संबंधित क्षेत्र में हठने में वस्तुत रहने और वहां से हठने के पश्चात उससे विचार करने की वजह में प्रक्रिया—(1) पर यदि कोई व्यक्ति विस्तार 10 के अधीन किसी धारा के हठ जाने के लिए कोई निवेदन जारी किया गया है—

(क) निवेदन किये गये रूप में हठने में वस्तुत रहा है, या

(क्ष) इस प्रकार हठने के पश्चात उपधारा (2) के अधीन विशेष न्यायालय की विलिक्त अनुमान के बिना उस क्षेत्र में ऐसे आदेश में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर विचार करता है, तो विशेष न्यायालय उसे विचारित कर सकेगा और उस क्षेत्र के बाहर ऐसे स्वार्थ पर, जो विशेष न्यायालय विनिर्दिष्ट कर, पुलिस अभियुक्त में हठना सकेगा।

(2) विशेष न्यायालय, विलिक्त आदेश द्वारा, किसी ऐसे व्यक्ति को जिसके विनिर्देश धारा 10 के अधीन आदेश किया गया है, अनुमान दे सकेगा कि वह उस क्षेत्र में हठने से हठ जाने का उसे निवेदन दिया गया था ऐसी अवधि के लिए और ऐसी कारणों के अधीन उठे हुए, जो ऐसे कार्य से विनिर्दिष्ट की जाए, लौट सकता है और अभियुक्त कारणों के सम्भव अनुमान के लिए उससे बनाने का कारण सकेगा कि वह धारा प्रतिस्थापित या उसके बाहर अवधि प्रमाणित हो।

(3) विशेष न्यायालय किसी भी समय ऐसी अनुमान की प्रतिस्थापन कर सकेगा।

(4) ऐसा विलिक्त, जो ऐसी अनुमान से उस क्षेत्र में वस्तुत आता है, जिससे उसे हठने के लिए निवेदन दिया गया था, अभियुक्त कारणों का प्रमाण करें और जिस अवधि के लिए उठा गई थी उसके बाहर पर या ऐसे अवधि के अवधि के अनुसार के पूर्व ऐसी अनुमान के प्रतिस्थापन किए जाने पर ऐसे केस ता बाहर हठ जाएगा और धारा 10 के अधीन विनिर्दिष्ट अवधि के अनुसार नागरिक के भीतर नई अनुमान के दिन वहाँ नहीं होंगे।
(5) If a person fails to observe any of the conditions imposed or to remove himself accordingly or having so removed himself enters or returns to such area without fresh permission the Special Court may cause him to be arrested and removed in police custody to such place outside such area as the Special Court may specify.

12. (1) Every person against whom an order has been made under section 10 shall, if so required by the Special Court, allow his measurements and photographs to be taken by a police officer.

(2) If any person referred to in sub-section (1), when required to allow his measurements or photographs to be taken resists or refuses to allow his taking of such measurements or photographs, it shall be lawful to use all necessary means to secure the taking thereof.

(3) Resistance to or refusal to allow the taking of measurements or photographs under sub-section (2) shall be deemed to be an offence under section 186 of the Indian Penal Code.

(4) Where an order under section 10 is revoked, all measurements and photographs (including negatives) taken under sub-section (2) shall be destroyed or made over to the person against whom such order is made.

13. Any person contravening an order of the Special Court made under section 10 shall be punishable with imprisonment for a term which may extend to one year and with fine.

CHAPTER IV
SPECIAL COURTS

14. For the purpose of providing for speedy trial, the State Government shall, with the concurrence of the Chief Justice of the High Court, by notification in the Official Gazette, specify for each district a Court of Session to be a Special Court to try the offences under this Act.

15. For every Special Court, the State Government shall, by notification in the Official Gazette, specify a Public Prosecutor or appoint an advocate who has been in practice as an advocate for not less than seven years, as a Special Public Prosecutor for the purpose of conducting cases in that Court.
(5) यदि कोई व्यक्ति अधिकृत अछुआन्तित पता वे के किसी का पालन करे या तदनुसार लघु के हटाने में असफल रहे या इस प्रकार हट जाने के प्रयास के किसी क्षेत्र में नई अनुशासन के रिहान्द नवनिर्माण या लीटेनेंग तो विशेष न्यायालय उसे निर्देशात्मक रूप से ले जाने और उसे उस क्षेत्र के बाहर अंतिम स्थान को, जो विशेष न्यायालय विनिर्देश दे, पुलिस अधिकारी में हटाने से होगा।

12. ऐसे व्यक्तियों के, जिनके विरुद्ध धारा 10 के अधीन भावना किया गया है, माप और फोटो बादल लेना—(1) प्रत्येक ऐसा व्यक्ति जिसके विरुद्ध धारा 10 के अधीन भावना किया गया है विशेष न्यायालय द्वारा ऐसी अपेक्षा की जाने पर, किसी पुलिस अधिकारी को अपने माप और फोटो ले लेने के लिए निर्देश दिए जाएंगे।

(2) यदि उपाधारण तत्कालीन व्यक्ति किसी पाप की जाती है कि वह अपने माप या फोटो ले लेने के, इस प्रकार माप या फोटो लिये जाने का प्रतिबंध लगाता है या उससे इंकार करता है तो यह विश्वसनीय होगा कि माप या फोटो लिये जाने का पुनर्त्याग करने के लिए सभी आवश्यक उपाय किए जाएंगे।

(3) उपाधारण (2) के अधीन लिए जाने वाले माप या फोटो का प्रतिबंध या उससे इंकार करने को भारतीय दंड युक्तित 1860 का 45 की धारा 186 के अधीन उपाधारण लागू होगा।

(4) जहां धारा 10 के अधीन किया गया भावना प्रतिस्थापित कर दिया जाता है जहां उपाधारण (2) के अधीन लिए गए थे वही माप और फोटो जिसके अंतर्गत में निर्देश भी हैं नष्ट कर दिए जाएँगे या उस व्यक्ति को शेष दिन गए जिसके विरुद्ध भावना किया गया था।

13. धारा 10 के अधीन भावना के बंपनालन के लिए श्वास—वह व्यक्ति जो धारा 10 के अधीन लिए गए विशेष न्यायालय के बादशह का उल्लंघन करेगा, कारापण्य से, जिसकी अनुसन्धान एक वर्ष तक की हो सकती और पुनर्विदेश होने देंगी।

बाध्यां 4

विशेष न्यायालय

14. विशेष न्यायालय—राज्य सरकार, सीरीजा विचारण का उपर्ध्वनिर्धारण के प्रयोजन के लिए, उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायमूल की सहभागिता से, राज्य में बालिस्टिक द्वारा, इस अनुमानित के अधीन अपेक्षाकृत विचारण का उपर्ध्वनिर्धारण करने के लिए प्रत्येक निषेध के लिए एक तेजस्वी न्यायालय को विशेष न्यायालय के रूप में विनिर्देश करेगी।

15. विशेष लोक अभियोजक—राज्य सरकार, प्रत्येक विशेष न्यायालय के लिए, राज्य में बालिस्टिक द्वारा, एक लोक अभियोजक विनिर्देश करेगी या जिसी ऐसी अभियोजन का, विचारण निषेध के रूप में विद्ययास में होती है, उस न्यायालय में नगरों के संगठन के प्रयोजन के लिए विशेष लोक, अभियोजक के रूप में नियुक्त करेगी।
CHAPTER V
MISCELLANEOUS

16. The provisions of section 10A of the Protection of Civil Rights Act, 1955 shall, so far as may be, apply for the purposes of imposition and realisation of collective fine and for all other matters connected therewith under this Act.

17. (1) A District Magistrate or a Sub-divisional Magistrate or any other Executive Magistrate or any police officer not below the rank of a Deputy Superintendent of Police may, on receiving information and after such inquiry as he may think necessary, has reason to believe that a person or a group of persons not belonging to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes, residing in or frequenting any place within the local limits of his jurisdiction is likely to commit an offence or has threatened to commit any offence under this Act and is of the opinion that there is sufficient ground for proceeding, declare such an area to be an area prone to atrocities and take necessary action for keeping the peace and good behaviour and maintenance of public order and tranquility and may take preventive action.

(2) The provisions of Chapters VIII, X and XI of the Code shall, so far as may be, apply for the purposes of sub-section (1).

(3) The State Government may, by notification in the Official Gazette, make one or more schemes specifying the manner in which the officers referred to in sub-section (1) shall take appropriate action specified in such scheme or schemes to prevent atrocities and to restore the feeling of security amongst the members of the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes.

18. Nothing in section 438 of the Code shall apply in relation to any case involving the arrest of any person on an accusation of having committed an offence under this Act.

19. The provisions of section 360 of the Code and the provisions of the Probation of Offenders Act, 1958 shall not apply to any person above the age of eighteen years who is found guilty of having committed an offence under this Act.
प्रश्न 16. यदि व्यक्ति की शारीरिक जुलाई अधिक होती है, तो उसके साथ ऐसे व्यक्ति के लिए कैसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए?

प्रश्न 17. व्यक्ति और व्यवस्था तेज होने पर स्थिति कैसे बदलती है?

व्यक्ति और व्यवस्था तेज होने पर स्थिति कैसे बदलती है?

(2) संहिता के अध्याय 8, 10 और 11 के उपर्युक्त जानकारी के लिए संहिता के प्रारूप देखें।

(3) रघु सरकार, जवाब में, अधिक जानकारी के लिए संहिता के प्रारूप के लिए संहिता के प्रारूप देखें।

18. अधिनियम के अधिन करार करने वाले व्यक्तियों को संहिता की धारा 438 तथा 438 के लागू न होना--संहिता की धारा 438 की कोई बात इस अधिनियम के अधीन कोई अति सत्ता के कल्पना के अभियोग पर निवेदन की गई।

19. इस अधिनियम के अधीन करार करने वाले व्यक्तियों को संहिता की धारा 360 या अवधारणा परिवर्तित अधिनियम के उपर्युक्त जानकारी के लिए संहिता की धारा 360 के उपर्युक्त अवधारणा परिवर्तित अधिनियम, 1958 (1958 का 20) के उपर्युक्त बारे में अधिक आयु के अधीन के लागू न होने के लिए संहिता के प्रारूप में लागू नहीं होगी जो इस अधिनियम के अधीन कोई अपदेश करने का दोषी पाया जाता है।
20. Save as otherwise provided in this Act, the provisions of this Act shall have effect notwithstanding anything inconsistent therewith contained in any other law for the time being in force or any custom or usage or any instrument having effect by virtue of any such law.

21. (1) Subject to such rules as the Central Government may make in this behalf, the State Government shall take such measures as may be necessary for the effective implementation of this Act.

(2) In particular, and without prejudice to the generality of the foregoing provisions, such measures may include,—

(i) the provision for adequate facilities, including legal aid, to the persons subjected to atrocities to enable them to avail themselves of justice;

(ii) the provision for travelling and maintenance expenses to witnesses, including the victims of atrocities, during investigation and trial of offences under this Act;

(iii) the provision for the economic and social rehabilitation of the victims of the atrocities;

(iv) the appointment of officers for initiating or exercising supervision over prosecutions for the contravention of the provisions of this Act;

(v) the setting up of committees at such appropriate levels as the State Government may think fit to assist that Government in formulation or implementation of such measures;

(vi) provision for a periodic survey of the working of the provisions of this Act with a view to suggesting measures for the better implementation of the provisions of this Act;

(vii) the identification of the areas where the members of the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes are likely to be subjected to atrocities and adoption of such measures so as to ensure safety for such members.

(3) The Central Government shall take such steps as may be necessary to co-ordinate the measures taken by the State Governments under sub-section (1).

(4) The Central Government shall, every year, place on the table of each House of Parliament a report on the measures taken by itself and by the State Governments in pursuance of the provisions of this section.
20. अधिनियम का जन्म विधियों पर अवधारित होना—इस अधिनियम में जैसा अन्यथा उपलब्ध है उसके सिवाय, इस अधिनियम के उपबंध, तत्त्वांग प्रज्वलित किसी अन्य विधि या किसी रूढ़ि या प्रशा या किसी अन्य विधि के भाषार पर प्रभाव रखने वाली किसी लिखित में उससे अवधारित किसी वात के होते हुए भी, प्रभावी होते।

21. अधिनियम का भ्रामांक किरायेन्याय सुलिखित करने का सरकार का कर्तव्य— (1) राज्य सरकार, ऐसे नियमों के अधीन रहते हुए, जो केंद्रीय सरकार इस लिखित बनाए, इस अधिनियम के भ्रामांक किरायेन्याय के लिए ऐसे उपयोग करें, जो सुविधाजनक हों।

(2) विशिष्टतया, और पूर्णांगी उपबंधों की व्यापकता पर प्रतिष्ठान प्रभाव बला दिखा, ऐसे उपयोगों के अंतर्गत लिखित हो सकेगा :-

(i) ऐसे व्यक्तियों को जिन पर अवधार बुझाना है नयात्रा प्राप्त करने में तम्मलय बनाने के लिए प्रजा सुविधाओं की, जिनके अंतर्गत विशिष्ट सहायता भी है, व्यवस्था;

(ii) इस अधिनियम के अधीन अपराध के अवधेषण और विचार द्वारा शासियों जिनके अंतर्गत अवधार बनाने के पीड़ित व्यक्ति भी हैं, यात्रा और शरण-पौर्ण द्वारा व्यवस्था की व्यवस्था;

(iii) अवधार के पीड़ित व्यक्तियों के आर्थिक और सामाजिक उपचार की व्यवस्था;

(iv) इस अधिनियम के उपबंधों के उल्लंघन के लिए अभियोजन प्राधम करने या उनका पद्धेशण करने के लिए अधिकारियों की नियुक्ति;

(v) ऐसे सूचित सब्बों पर जो राज्य सरकार ऐसे उपयोगों की रचना या उनके किरायेन्याय के लिए उस बहाल की सहायता करने के लिए वैद्य समस्ये, सहितियों की स्थापना करना;

(vi) इस अधिनियम के उपबंधों के वैहार किरायेन्याय के लिए उपयोग के प्रजा सवाल जीवित से इस अधिनियम के उपबंधों के भाषार का समान-समान पर पद्धेशण करने की व्यवस्था;

(vii) उन लेखों की पहचान कला वही अनुवृतित जाति और अनुपूर्खित कलाबास के बादों पर अवधार होने की संज्ञायित है और ऐसे उपयोग कला जिससे ऐसे सवाल की दुवाल सुलिखित हो सकें।

(3) केंद्रीय सरकार, ऐसे उपयोग करें, जो उपयोग (१) के अधीन राज्य अवधार उपयोग करने में सहयोग करने के लिए सुविधाजनक हों।

(4) केंद्रीय सरकार, प्रस्तूतक कर्म, लेख, के प्रस्तूत खस्त के पत्र के प्रावधार उपयोग के अनुवृतित में लांच उनके आवश्यक और राज्य अवधार्यों द्वारा निभाए उपयोग के संबंध में एक विशेष स्थैर्य जनित।
22. No suit, prosecution or other legal proceedings shall lie against the Central Government or against the State Government or any officer or authority of Government or any other person for anything which is in good faith done or intended to be done under this Act.

23. (1) The Central Government may, by notification in the Official Gazette, make rules for carrying out the purposes of this Act.

(2) Every rule made under this Act shall be laid, as soon as may be after it is made, before each House of Parliament, while it is in session for a total period of thirty days which may be comprised in one session or in two or more successive sessions, and if, before the expiry of the session immediately following the session or the successive sessions aforesaid, both Houses agree in making any modification in the rule or both Houses agree that the rule should not be made, the rule shall thereafter have effect only in such modified form or be of no effect, as the case may be; so, however, that any such modification or annulment shall be without prejudice to the validity of anything previously done under that rule.

V. S. RAMA DEVI,
Sécy. to the Govt. of India.
22. सदस्यापूर्वक की गई कार्यवाही के लिए संरक्षण—इस अधिनियम के अधीन सदस्यापूर्वक की गई या की जाने के लिए आश्चर्यित किसी बात के लिए कोई भी वाद, अभियोजन या अन्य दिशितक कार्यवाही केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध या, राज्य सरकार या सरकार के किसी अधिकारी या प्रावधानक अथवा किसी अन्य व्यक्ति के विरुद्ध नहीं होगी।

23. नियम बनाने की शक्ति—(1) केन्द्रीय सरकार रजपत्र में अधिसूचना द्वारा, इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यरत करने के लिए नियम बना सकेगी।

(2) इस अधिनियम के अधीन बनाया गया प्रत्येक नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीर्ष संसद के प्रत्येक सत्र के समय, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए ख्या जाएगा। यह अवधि एक सत्र में अवधि दो या अधिक आनुमानिक सत्रों में पूरी हो सकती है। यदि उस सत्र के या पूर्वकालिक आनुमानिक सत्रों के की की बार के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सत्र उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएंगे तो तत्परता वह ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा। यदि उनके अवसान के पूर्व दोनों सत्र सहमत हो जाएं तो वह नियम नहीं बनाया जाए राहिते तो तत्परता वह नियमावली हो जाएगा, किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या नियमावली होते हैं उसके अवधि पहले की गई किसी बात की, विभिन्नात्मक पर उल्लेख नहीं पड़ेगा।